



कृषिवानिकी Agroforestry

समाचार पत्र
Newsletter



राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी
National Research Centre for Agroforestry, Jhansi

जुलाई-सितम्बर, 2002
अंक- 98, संख्या (3)

July- September, 2002
Vol. 14, No. 3

सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग,
कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, एवं महा
निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली का भ्रमण

Visit of
Secretary, DARE, Govt. of India
& Director General, ICAR,
New Delhi

माननीय डा. पंजाब सिंह, सचिव, कृषि
अनुसंधान शिक्षा विभाग भारत सरकार एवं
महानिदेशक, भारतीय
अनुसंधान परिषद, कृषि
मंत्रालय, भारत
सरकार, नई दिल्ली ने
दिनांक 27 सितम्बर,
2002 को राष्ट्रीय
कृषिवानिकी अनुसंधान
केन्द्र, झाँसी का भ्रमण

Hon'ble Dr. Panjab Singh
Secretary, DARE, Govt. of India &
Director General
, ICAR , New
Delhi visited
National Rese-
arch Centre for
Agroforestry,
Jhansi on 27th
September, 2002.
Dr. P. Rai,
Director (Acting)



किया। केन्द्र के कार्यवाहक निदेशक, डा. पी. राय ने
अपने वरिष्ठ साथियों एवं अन्य कर्मचारियों के साथ
विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया।

along with his senior colleagues
welcomed Dr. Panjab Singh. A meeting
with all the staff members of the Centre
was held in the conference hall of

सर्वप्रथम डा. पंजाब सिंह ने केन्द्र के सभी सदस्यों के साथ सभागार में आयोजित बैठक में भाग लिया।

डा. पी. राय ने संक्षेप में केन्द्र के अनुसंधान कार्य एवं अन्य क्रिया कलाओं, तथा कृषिवानिकी समन्वित परियोजनाओं के केन्द्रों की प्रगति को प्रस्तुत किया।

डा. पंजाब सिंह ने केन्द्र की प्रगति की सराहना की। केन्द्र में निर्मित बीज भण्डार का उद्घाटन किया। तत्पश्चात केन्द्र के शोध क्षेत्र व नर्सरी का भ्रमण किया। जहाँ पर डा. राय ने विभिन्न शोध कार्यों की प्रगति को बताया।

अन्त में डा. पंजाब सिंह ने केन्द्र के नये कार्यालय भवन के सामने वृक्षारोपण किया।



the Centre. Dr. P. Rai, Director (Acting) briefly presented the progress of research and other activities of the Centre including activities of All Indian Coordinated Research Project on Agroforestry. Dr. Panjab Singh, DG, ICAR & Secretary, DARE, Govt. of India inaugurated the seed store of the Centre. Dr. Rai showed the imp-

experiments, Centre's new building complex and other facilities of the Centre. Dr. Panjab Singh planted the sapling in front of New Building of the Centre.

The Hon'ble guest Dr. Panjab Singh, appreciated the progress of the Centre.



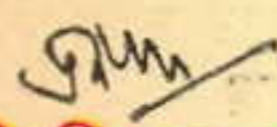
कृषि चिकित्सा एवं कृषि उद्यमिता कार्यक्रम का अप्रैल 9, 2002 को भारत सरकार ने अधिकारिक तौर पर प्रमोचित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कृषि स्नातकों को न केवल स्वरोजगारित करना बल्कि कृषि विस्तार एवं व्यापार का जाल बढ़ाना है।

कृषि चिकित्सा एवं कृषि उद्यमिता कार्यक्रम को लघु किसानों की उद्यमिता समिति जो कि भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के सहयोग से मैनेज, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक द्वारा चलाया जा रहा है और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का जाल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों एवं एन.जी.ओ. द्वारा चलाया जा रहा है।



राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक मुख्य केन्द्र है। इस केन्द्र द्वारा प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम अप्रैल 9, 2002 से जून 8, 2002 के मध्य चलाया गया। जिसमें 21 कृषि स्नातकों ने भाग लिया। उनमें से चार कृषि स्नातकों द्वारा अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया जा चुका है एवं दो लोग अपना व्यवसाय शुरू करने जा रहे हैं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कृषि स्नातकों को प्रबंधन के सिद्धांत, अभ्यास एवं कृषि चिकित्सा एवं कृषि उद्यमिता को अपने क्षेत्र में विकसित करना है।

इस कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण के बाद कृषि स्नातक अपने-अपने प्रोजेक्ट द्वारा अन्य व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान कर सकें। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 9 नवम्बर से 7 जनवरी, 2003 तक से शुरू किया जा रहा है। इस कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण को सुधारना हमारा उद्देश्य है जिससे कि कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके।


(प्रसिद्धि राय)


The government of India formally launched the "Agriclinics and Agribusiness Centre's Scheme" on April 9, 2002. The scheme aims at not only empowering the agricultural graduates for self employment but also aims at establishing a network of agricultural extension and marketing.

The scheme is run by the Small Farmers Agribusiness Consortium (SFAC) a body of Union Ministry of Agriculture in collaboration with National Institute of Agricultural Extension Management (MANAGE), National Bank for Agricultural and Rural Development (NABARD) and a

net work of training Centres including ICAR Institutes, SAUs and NGOs.

National Research Centre for Agroforestry (NRCAF), Jhansi is one of the training Centres in the network. The first training programme was conducted by the Centre during April 9 to June, 8, 2002 in which 21 agricultural graduates participated. Out of these four have started their Centre. The training orients the agricultural graduates on management principles and practices, entrepreneurship and practical exposures on selected agriclinics/agribusiness project areas.

There is a component of hand-holding viz. Post training guidance for enabling the trained agricultural graduates to venture into their identified projects. The second training programme to be organized by our Centre is scheduled from Nov. 9, 2002 to Jan. 7, 2003. It is our endeavour to impart quality training in order to ensure success of the scheme.


(P. Rai)

उत्तर प्रदेश के पश्चिम क्षेत्र में खेत की मेड़ों पर पॉपलर के वृक्षारोपण के साथ सिंचित अवस्था में गेहूं का उत्पादन

भारत के उत्तरी-पश्चिम भाग में मेड़ों पर लगे पॉपलर के साथ रबी फसल में गेहूं एक बहुत ही महत्वपूर्ण फसल है। गेहूं को काष्ठ बहुवर्षीय वृक्षों के साथ उगाने पर थोड़ी छाया तथा पोषक तत्वों तथा नमी की वजह से उसकी बढ़ोत्तरी पर असर पड़ता है। गेहूं की बढ़ोत्तरी तथा उत्पादकता पर मेड़ों पर पॉपलर का प्रभाव देखने के लिए जे. वी. कालेज, बड़ोत उ.प्र. के प्रक्षेत्र पर अध्ययन किया गया।

परीक्षण स्थल की भूमि का गठन बलुई दोमट, मटियार विभिन्न प्रकार का था। जिसमें नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की सांद्रता कम थी जिनकी वजह से पी.एच. 6.5 से 7.1 तक था। उस क्षेत्र की औसत वर्षा 652 मि.मी. थी जोकि कुल मानसून (जुलाई से सितम्बर) 84 प्रतिशत थी। गर्मी का मौसम बहुत गरम तथा हवा युक्त था। फसल की बढ़ोत्तरी के समय अधिकतम तापमान 37.7°C से 17.0°C तक तथा न्यूनतम 23.4°C से 4.2°C तक पाया गया।

मेड़ो पर 3.5 मी. की दूरी पर उत्तरी पूर्व तथा उत्तरी पश्चिमी देशों में स्थित तीन साल

Wheat cultivation in association with boundary plantation of poplar under irrigated conditions of Western U.P.

Wheat (*Triticum aestivum*) is one of the most important *rabi* crops being grown with association of boundary plantation of poplar in most of the northern -western parts of India. Growth environment of wheat differs from that of pure agricultural system due to shading, competition for nutrients as well as moisture when grown in association of woody perennials. To determine the effect of poplar boundary plantations on growth and yield of wheat under irrigated conditions, a field study was conducted for two years at the Research Farm of J.V. College, Baraut, U.P., India.

The soil of the experimental area varied in texture from sandy clay loam to loam and was low in nitrogen and phosphorus with pH varying from 6.5 to 7.1. The average annual rainfall of the area is 652mm, out of which more than 84% is received during monsoon season (July to September). Summers are very hot and windy with maximum temperature during crop growth period varied from 37.7°C to 17.0°C and minimum from 23.4°C to 4.2°C.

Wheat, variety HD-2285, was sown in an agricultural field having a single row boundary plantation (60 m long) of three year old poplar (*Populus deltoides*, clone 'G-3') tree, already existing (3.5 m tree to tree distance) and oriented in north-east and south-west direction. The effect of trees

पुराने पापलर वृक्षों के साथ गेहूं की बढ़ोत्तरी तथा उत्पादकता के आधार पर मापा गया। परीक्षण के लिए 10 मी. चौड़ी तथा 15 मी. लम्बी पट्टी को 5 भागों में बांटा गया। प्रत्येक भाग में 10 मी. X 3 मी. क्षेत्र में बाँटा गया। 15 मी. पीछे के भाग को कन्ट्रोल की तरह लिया गया। इस प्रकार छः दूरियों (0-3, 3-6, 6-9, 9-12, 12-15 मी. एवं कन्ट्रोल बिना प्रभाव) पर आंकड़ा इकट्ठे किये। गेहूं की उत्पादकता किलो प्रति हेक्टेयर है जो कि 6X3 मीटर कुल क्षेत्र पर अंकित की गई।

पापलर वृक्षों की उम्र बढ़ने के साथ गेहूं की बढ़ोत्तरी पर उनका विपरीत प्रभाव पड़ा। तीन साल की उम्र के पापलर वृक्षों के साथ गेहूं के दानों की उत्पादकता पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा। परंतु 4 वर्ष पुराने वृक्ष जो कि 3 मी. की दूरी पर थे उसने 15.5 प्रतिशत उत्पादकता पर कमी आयी। गेहूं की उत्पादकता 9 मी. की दूरी पर स्थित वृक्षों की वजह से गेहूं के वृक्षों के घनत्व पर बहुत प्रभाव पड़ा। 3 से 9 मी. की दूरी पर स्थित वृक्षों से प्रभावित शाखायें, शुष्क उत्पादन, 1000 दानों का वजन, भूसा का उत्पादन, पत्तियों के घनत्व में बढ़ोत्तरी पायी गयी जो कि वृक्षारोपण की अवधि पर आधारित थी। इससे स्पष्ट होता है कि फसल उत्पादन में कमी सिर्फ 0-3 मी. की वजह से होती

on the wheat crop was estimated in terms of growth and yield parameters. To take the observations, 10m wide and 15m long strip (one replication) was divided into five segments. Each segment had 10m (along the tree line) x 3m (perpendicular to the tree line) area. Area beyond 15m was treated as unaffected or control. Thus, there were six distances (0-3, 3-6, 6-9, 9-12, 12-15m and control, no effect) from where observations were recorded. Grain yield (kg. ha⁻¹) was determined on the net plot area (6x3m) basis.

The adverse effect of poplar trees on wheat growth increased with advancement in tree age. No significant adverse effect was noticed on wheat grain yield when grown with association of 3 year old boundary plantation of poplar. Whereas, significant decline of 15.5% was recorded up to a distance of 3m from the tree base due to 4 year old plantation. Among growth parameters, plant population of wheat suffered heavily up to a distance of 9m. However, relative proportion of effective tillers, dry matter production, 1000 grain weight, straw yield and leaf area index increased significantly between 3-9m distance from tree line, depending upon the age of plantation. This clearly brings out that loss in yield due to adverse effect of tree line was recorded only near the line (0-3 m

है। हालांकि पॉपलर से प्राप्त आमदनी गेहूं की फसल में कमी को पूरा कर देता है।

एन.के.शर्मा,¹ एच.पी.सिंह,² जे.एस. सामरा
एवं के.एस. डडवाल
केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण
एवं प्रशिक्षण संस्थान देहरादून

1. जनता वैदिक कालेज, बडौत, चौ. च. सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
2. उप महानिदेशक, (प्रा. स. प्र.), मा. कृ. अनु, परि. नई दिल्ली

संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद

निदेशक, राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झॉंसी, के कर्मचारियों द्वारा चुनाव के बाद, नयी संस्थान संयुक्त कर्मचारी का गठन 1-10-2002 से 30-09-2005 तक के लिये निम्न प्रकार से कर दिया है।

कार्यालय पक्ष

1. डा. वी.के. गुप्ता, प्रधान वैज्ञानिक
2. डा. ओ.पी. चतुर्वेदी, प्रधान वैज्ञानिक
3. श्री मुन्ना राम, प्रधान वैज्ञानिक
4. श्री बी. सिंह, व. प्रक्षेत्र प्रबन्धक
5. श्री आर. बी. शर्मा, स.वि. एवं ले. अधि.
6. श्री एन. राजा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी
7. श्रीमती उमा, त. अधि., विशेष आमंत्रित सदस्य

distance). However, additional income from poplars compensated for the losses caused by reduction in wheat production.

N.K. Sharma,¹ H.P. Singh,² J.S. Samra
and K.S. Dadhwal
Central Soil and Water Conservation Research
and Training Institute, Dehradun

1. Janta vedic college, Baraut, CCS Universtiy Meerut, U.P.
2. DDG (NRM), ICAR, New Delhi

Institute Joint Staff Council (IJSC)

On the basis of the election of the staff representatives, the Director, NRC for Agroforestry, Jhansi constituted the IJSC for the period from 01.10.2002 to 30.09.2005 of the Centre as under :

Office Side

1. Dr. V.K. Gupta, Pr. Scientist
2. Dr. O.P. Chaturvedi, Pr. Scientist
3. Sh. Munna Ram, Pr. Scientist & Member Secretary
4. Sh. B. Singh, Sr. Farm Manager
5. Sh. R.B. Sharma, AF&AO
6. Sh. N. Raja, AAO
7. Smt. Uma, T.O., Special Invitee

कर्मचारी पक्ष

1. श्री दीपक विज, क. आशुलिपिक सचिव स.स.क.प.
2. श्री राजेन्द्रसिंह, तक. अधिकारी सदस्य, के.स.स.क.प.
3. श्री के.पी. शर्मा, वरिष्ठ लिपिक
4. श्री शिशुपाल सिंह, टी-3
5. श्री अतर सिंह, एस.एस.जी.-3
6. श्री कामता प्रसाद, एस.एस.जी.-1

किसान मेला

मध्यप्रदेश के जिला शिवपुरी के ग्राम नरौआ में 18 जुलाई, 2002 को किसान मेले का आयोजन राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी एवं स्टेट बैंक इन्दौर शाखा नरौआ (शिवपुरी) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। किसान मेले की अध्यक्षता स्टेट बैंक इन्दौर, गुना मण्डल के सहायक महाप्रबन्धक, श्री एस.एस. सिसौदिया ने की। केन्द्र के डा. वी. के गुप्ता, कार्यवाहक निदेशक मुख्य अतिथि थे। किसान मेले में समीपस्थ आठ गाँवों के किसानों तथा पाँच सरपंचों, ब्लाक स्तर के कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। मेले के संयोजक डा. आर.पी. द्विवेदी वैज्ञानिक, ब. वेतनमान (कृषि प्रसार) थे।



Staff Side

1. Sh. Deepak Vij, Jr. Steno, Secretary IJSC
2. Sh. Rajendra Singh, T.O., CJSC Member
3. Sh. K.P. Sharma, Sr. Clerk
4. Sh. Shishupal Singh, T-3
5. Sh. Attar Singh, SSG-III
6. Sh. Kamta Prasad, SSG-I

Kisan Mela

A Kisan Mela was organised by the Centre with the collaboration of State Bank of Indore, Branch Naraua, District, Shivpuri of Madhya Pradesh State on July 18, 2002. Sh. S.S. Sisodia, Assistant General Manager, State Bank of Indore, Guna Division was the chairman of the Kisan Mela and Dr. V.K. Gupta, Incharge Director, of the Centre was the Chief Guest.

Farmers of eight near by villages, five sarpanch and agriculture officers of block level participated in the Kisan Mela. Dr. R.P. Dwivedi, Scientist, Sr. Scale (Extension) organised the programme.

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 30-31 जुलाई, 2002 को झांसी जिले के विकास खण्ड बबीना के ग्राम नयाखेड़ा में दो दिवसीय ऑवला तथा बेर प्रजाति की कलम बांधने की विधि का कृषकों तथा ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बबीना ब्लॉक के नयाखेड़ा, सुंकवा, चन्दौली तथा शेखर गाँवों के 28 कृषकों एवं ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया। डॉ. आर. के. तिवारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (उद्यानिकी) ने कलम बांधने की विधि का प्रदर्शन किया जिसको किसानों ने खुद

करके सीखा। कार्यक्रम के संयोजक डा. आर.पी. द्विवेदी, वैज्ञानिक प्रसार (वरिष्ठ वेतनमान) ने कृषकों विशेषकर ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में कृषिवानिकी के योगदान पर विस्तार से चर्चा की। अंत में प्रगतिशील किसान श्री शोभाराम राजपूत ने आभार व्यक्त किया।



Farmers Training Programme

Farmers training on pruning of Ber and Aonla was organised by the Centre on 30-31 July, 2002 at village Naya-khera, Block Babeena of Jhansi district. During two days training programme about 28 farmers

and village youth from Nayakhera, Sukawan, Chandauli and Shekar village participated. Budding was demonstrated by Dr. R.K. Tiwari, Sr. Scientist (Horticulture) and later on farmers conducted the exercise of budding. Dr. R.P. Dwivedi,

Scientist, Sr. Scale and programme convener discussed with farmers about the contribution of agroforestry for self employment. In the end, progressive farmer Sh. Shobha Ram proposed the vote of thanks.

वन महोत्सव

केन्द्र द्वारा दिनांक 19, अगस्त, 2002 को

वन महोत्सव का आयोजन किया गया। वन महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र के प्रक्षेत्र पर डा. पी. राय, निदेशक (कार्यवाहक) तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।



Van Mahotsav

Centre organised Van Mahotsav on 19th, August, 2002 in which Dr. P. Rai, Director (Acting) and all the officers as well as staff members planted the tree saplings in the premises of the Centre.

मानस संसाधन विकास

डा. अनिल कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादक व्याधि) ने "फ्रन्टियर्स इन इकोफेन्डली मैनेजमेंट आफ क्राप डिसिसेज एण्ड पेस्ट एण्ड यूटिलिटी ऑफ बायोफरटिलाइजर इन इम्प्रूविंग स्वायल फरटिलिटी" शरद कालीन स्कूल में 6 अगस्त से 4 सितम्बर, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ प्लांट पैथोलॉजी एण्ड एग्रीकल्चरल माइक्रोवायलाजी, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी में भागीदारी की जो कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया।

डा. राम नेवाज, वरिष्ठ वैज्ञानिक (शस्य) ने "इन्टीग्रेटेड न्यूट्रीयेन्ट्स मैनेजमेंट फार सस्टनेबिल एग्रीकल्चर" में शरद कालीन स्कूल, 3 से 23 सितम्बर, 2002 तक डिपार्टमेंट आफ एग्रीकल्चर केमिस्ट्री एण्ड स्वायल साइंस, पी डी के वी, अकोला (महाराष्ट्र) में भागीदारी की जो कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया था।

Human Resource Development

Dr. Anil Kumar, Sr. Scientist (Plant Pathology) participated in the Winter School on "Frontiers in Ecofriendly Mangement of Crop Diseases and Pests and Utility of Biofertilizer in Improving Soil Fertility" from 6 August to 4 September, 2002 at Department of Plant Pathology and Agricultural Microbiology, Mahatma Phule Krishi Vidhyapeeth, Rahuri (M.S.), organised by ICAR, New Delhi.

Dr. Ram Newaj, Sr. Scientist (Agronomy) participated in the Winter School on "Integrated Nutrient Mangement for Sustainable Agriculture" from 3 to 23 September, 2002 at Department of Agriculture Chemistry and Soil Science, PDKV, Akola (M.S.) organised by ICAR, New Delhi.

डा. पी. राय निदेशक (कार्यवाहक) ने लुधियाना में आयोजित रीजनल कमेटी IV की बैठक में दिनांक 13-14, अगस्त, 2002 को भाग लिया।

Dr. P. Rai Director (Acting) of the Centre participated in the meeting of Regional Committee IV at Ludhiana on 13-14, August 2002.

विशिष्ट आगन्तुक

1. माननीय डा. पंजाब सिंह, सचिव, कृषि अनुसंधान शिक्षा विभाग भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय अनुसंधान परिषद, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
2. माननीय श्री हुकुमदेव नारायण यादव, कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. डा. एस. के. पाटिल, डाइरेक्टर आफ इन्सट्रक्सन (फारेस्ट्री), कालेज आफ फोरेस्ट्री, सिरसी, कर्नाटक।
4. डा. एच. शिवाना, एसोसिएट प्रोफेसर, कालेज आफ फोरेस्ट्री सिरसी, कर्नाटक।
5. डा. मोहन सिंह, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, नेट वर्क प्रोजेक्ट आन आरगेनिक फारमिंग, आई. आई. एस. एस, भोपाल।
6. डा. मुनेश्वर सिंह, विभागाध्यक्ष, स्वायत्त कैमिस्ट्री एण्ड फरटिलिटी, आई आई एसएस, भोपाल।
7. डा. एच. एस. राय, चीफ वेटेनरी आफिसर, महोबा।
8. डा. ए.के. अग्निहोत्री, उप निदेशक कृषि, झांसी।
9. डा. रामबली, संयुक्त कृषि निदेशक, झांसी।

Visitors

1. Hon'ble Dr. Panjab Singh, Secretary, DARE, Govt. of India & Director General, ICAR, New Delhi.
2. Hon'ble Sh. Hukumdev Narayan Yadav, Union Minister of State for Agriculture, New Delhi
3. Dr. S. K. Patil, Director of Instructions (Forestry), College of Forestry, Sirsi, Karnataka.
4. Dr. H. Shivanna, Associate Professor, College of Forestry, Sirsi, Karnataka.
5. Dr. Mohan Singh, Project Coordinator, Network Project on Organic Farming, IISS, Bhopal.
6. Dr. Muneshwar Singh, Head of Division, Soil Chemistry & Fertility, IISS, Bhopal.
7. Dr. H.S. Rai, Chief Veterinary Officer, Mahoba.
8. Dr. A.K. Agnihotri, Dy. Director Agriculture, Jhansi.
9. Dr. Rambali, Joint Director Agriculture, Jhansi.

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी में दिनांक 16 सितम्बर 2002 को केन्द्र के निदेशक डा. प्रसिद्धि राय की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सर्व प्रथम सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने

सरकारी कामकाज देने के लिये अधिक हिन्दी में करने की रमाकान्त तिवारी, हिन्दी ने राजभाषा कार्यक्रम के रूप एवं डालते हुये सभी का प्रभारी अधिकारी हिन्दी के कार्यों की जानकारी दी और मानदण्डों को



मे हिन्दी को बढ़ावा से अधिक काम शपथ ली। डा. प्रभारी अधिकारी कार्यान्वयन के सीमाओं पर प्रकाश स्वागत किया। हिन्दी ने केन्द्र में प्रगति की संक्षिप्त भारत सरकार के दोहराया। इसके

बाद हिन्दी को बढ़ावा देने के लिये केन्द्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने विचार व्यक्त किये। केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा कृषिवानिकी तकनीक को किसानों तक पहुँचाने के लिये हिन्दी में पत्र पत्रिकाओं को विकसित करने पर बल दिया गया जिससे किसानों को कृषिवानिकी तकनीकी की जानकारी दी जा सके। इस प्रकार सभी वैज्ञानिकों का यह मानना है कि हिन्दी ही एक ऐसी सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा तकनीकी का प्रचार प्रसार किया जा सकता है। डा. प्रसिद्धि राय, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केन्द्र द्वारा हिन्दी को बढ़ावा देने के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी देते हुये उन्होंने सहर्ष घोषणा की कि 80 प्रतिशत से अधिक काम-काज हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वाले संस्थानों की सूची में केन्द्र का नाम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा शामिल कर लिया गया है। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि केन्द्र द्वारा प्रकाशित कृषिवानिकी समाचार भी द्विभाषी करने से यहाँ हो रहे शोध कार्यों को कृषकों तक सीधे उनकी भाषा में उपलब्ध हो सकेंगे। निदेशक महोदय ने जानकारी दी कि केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न फल वृक्षों व वानस्पतिक संवर्धन के बारे में किसानों को प्रशिक्षण हिन्दी में दिया गया। निदेशक महोदय ने यह भी अवगत कराया कि केन्द्र द्वारा शासकीय कार्य अधिक से अधिक हिन्दी भाषा में हो रहे हैं और उन्होंने समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भविष्य में अधिक से अधिक शासकीय कार्य हिन्दी में किये जाने का आह्वान किया। केन्द्र के सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी श्री राम बाबू शर्मा ने सुझाव दिया कि हमें हिन्दी कार्य करने में झिझक नहीं होनी चाहिये और खुलकर हिन्दी भाषा का प्रयोग करना चाहिये। उन्होंने यह भी कहा कि अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में फिल्म जगत हिन्दी को काफी बढ़ावा दे रहा है। प्रभारी अधिकारी हिन्दी ने जोर देकर कहा कि रचनात्मकता किसी भाषा, देश या जाति पर निर्भर नहीं करती, हिन्दी के माध्यम से हम सभी अपनी रचनात्मकता को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

**कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली का भ्रमण**

माननीय श्री हुकुमदेव नारायण यादव, कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी पर दिनांक 23 सितम्बर, 2002 को भ्रमण किया। डा. पी. राय, निदेशक (कार्यवाहक) ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ मंत्री महोदय का स्वागत किया।

माननीय श्री हुकुमदेव नारायण यादव ने सर्वप्रथम केन्द्र के नये कार्यालय भवन के सामने वृक्षारोपण किया। डा. राय ने नर्सरी, शोध कार्यो व मुख्य सुविधाओं को मंत्री महोदय को दिखाया।

मंत्री महोदय ने भ्रमण के बाद केन्द्र के सभागार में आयोजित बैठक में भाग लिया। जहाँ पर केन्द्र के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे। डा. राय ने संक्षेप में शोध कार्यो की आख्या प्रस्तुत की। श्री हुकुम देव नारायण यादव ने केन्द्र की प्रगति की सराहना की।



**Visit of Minister of State for Agriculture
Government of India, New Delhi**

Hon'ble Shri. Hukumdev Narayan Yadav, Minister of State for Agriculture, Govt. of India, New Delhi visited the Centre on 23 September, 2002. Dr. P. Rai, Director (Acting) along with scientists and other staff members welcomed the Minister.

Hon'ble Shri Hukum dev Narayan



Yadav planted a sapling in front of new building complex. Dr. Rai showed the nursery, experimental area and important facilities of the Centre. After the visit, a meeting with all the staff of

the Centre was held. Dr. P. Rai, briefly presented the progress of research and other activities of the Centre. Shri Hukumdev Narayan Yadav appreciated the progress of the Centre.

प्रकाशक-निदेशक

रा.कृ.वा.अनु. केन्द्र, झाँसी - 284003
दूरभाष : +91-(0517) 730213, 730214
फैक्स : +91- (0517) - 730264
ईमेल: एनआरसीएफ @ हब1. एनआईसी.इन

Published by : Director

N.R.C.A.F., Jhansi - 284003
Ph: +91(0517) 730213, 730214
Fax : +91 (0517) 730264
E-mail:nrcaf@hub1.nic.in

दिशा निर्देश एवं मार्ग दर्शन

डा. प्रसिद्धि राय, निदेशक (कार्यवाहक),
संकलन एवं सम्पादन
ए.के.हाण्डा, राजीव तिवारी एवं के. करीमुल्ला
छायाकन : राजेश श्रीवास्तव, टंकण: हूब लाल

Supervision & Guidance

Dr. P. Rai, Director (Acting)

Compiled & Edited

A.K. Handa, Rajeev Tiwari and K. Kareemulla
Photographs : Rajesh Shrivastava
Typing : Hoob Lal